an>

Title: Regarding the condition of mill workers in the country.

श्री अरविंद सावंत (मुम्बई दक्षिण) : अध्यक्ष महोदया, मुंबई में The National Textile Corporation was formed in the year 1968. यह इसलिए बनाया गया था कि वस्त्र उद्योग की जो सारी मिले हैं, वे उस वक्त बुरी हालत में थीं। उनको पनर्जीवित किया जाए, उनको ताकतवर बनाया जाए, इसलिए इस National Textile Corporation को बनाया। आगे चल कर सन् 1977 तक उसके पास 119 मिलें आई। इसके बाद में उन्होंने 77 मिलें बंद कर दीं, क्योंकि प्रोडक्शन नहीं हो सकता। मुंबई में आज 24 मिलें उनके पास हैं, उसमें से सिर्फ चार मिलें चल रही हैं। बाकी मिलें बंद पड़ी हुई हैं। National Textile Corporation जब बना था, उसका उद्देश्य उनका रिवाइवल और मॉर्डनाइज़ेशन करना था। इन्होंने दस या पंद्रह प्रतिशत थोड़ा सा मॉर्डनाइज़ेशन किया है। लेकिन पूरा मॉर्डनाइज़ेशन आज भी नहीं हो रहा है। इस स्थिति में National Textile Corporation के अंदर जो पुरानी इमारतें हैं, जैसे दिग्विजय मिल हो, इंडिया यूनाइटिड मिल हो, इन पुरानी इमारतों को पुनर्जीवित करने के लिए भी कुछ प्रयास करने की आवश्यकता थी। भारत माता थिएटर, आप जनती होंगी, उसके पीछे जो इंडिया युनाइटिड मिल है, इन्होंने भास्कर कर के एक अखबार निकलता है उनके साथ ज्वाइंट वेंचर किया था, लेकिन उन्होंने भी कुछ भी कदम नहीं उठाए हैं। आज ऐसी हालत है कि यह इमारत गिर जाएगी। उसके ऊपर भी ध्यान देना है। जिन कर्मचारियों ने वीआरएस लिए हैं, उन्होंने एग्रीमेंट के तहत किया है। उसमें भी भ्रष्टचार हो रहा है। वीआरएस देने के बाद भी छह-छह महीने तक उसकी वीआरएस को मान्यता नहीं दी जाती है। मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री का ध्यान इस पर आकर्षित करना चाहता हूँ कि कर्मचारियों को भी न्याय दें और इन इमारतों के पुनर्जीवन और मॉर्डनाइज़ेशन की बात है, उसके ऊपर जल्दी ध्यान देकर उसका काम शीघ्र करें।

माननीय अध्यक्ष :

श्री पी.पी.चौधरी,

श्री श्रीरंग आप्पा बारणे,

श्री राहुल शेवाले,

श्री विनायक भाऊराव राऊत,

प्रो. रविन्द्र विश्वनाथ गायकवाड़,

श्री चन्द्रकांत खैरे,

श्री संजय हरिभाऊ जाधव एवं

डॉ. रविन्द्र बाबू को श्री अरविंद सावंत द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।